यह पुस्तक पाठकों को परिचय पाने के लिए है। इसमें उपरोक्त मूल्य अब लागू नहीं है।

वेद-संस्थान के सरल, सरस, प्रेरक प्रकाशन

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' की वैदिक, नैतिक, आध्यात्मिक कृतियाँ,
डॉ० फ़तहसिंह का योगाशास्त्रीय वैदिक विश्लेषण,
डॉ० अभयदेव का मौलिक वैदिक चिन्तन : अवश्य पठनीय, मननीय

रु १००/- या अधिक की पुस्तकों पर २०% छूट; * चिह्न वाली पुस्तकों पर और भी अधिक छूट उपलब्ध।

प्रकाशनों का पूरा सैट, विशेष रियायत पर रु० ७७०/- में

+नैतिकोत्थान

उत्तम स्वभाव	०.८०
चरित्र-निर्माण	१.५०
जीवन संग्राम शास्त्र*	६.००
जीवन संविधान*	४.००
यज्ञमय जीवन पद्धति*	७.००
विवेकमय जीवन*	१४.००
(डॉ० अभयदेव)	
भारत के अध्यापकों से	२.००
भारत के विद्यार्थियों से	३.५०
मानवधर्म	१.५०
वैदिक बाल शिक्षा (४ भाग)	१०.००
(फुटकर भागों का कुल मूल्य रु १२.५०)	
वैदिक स्त्री-शिक्षा (२ भाग)	३.२०
व्यक्तित्व का सुनिर्माण	२४.००

+पद्य

गाथा देव 'विदेह' की*	०.५०
जौहर-गान	०.५०
दयानन्द-चरितामृत (दोहा-चौपाई शैली में)	१०.००
योग-तरंग*	४.००
विदेह-गीतावली	७.५०

+स्वास्थ्य

स्वास्थ्य और सौन्दर्य	३.००
Health and Beauty	**4.00**

+गृहस्थ

गृहस्थ-विज्ञान	८.००
गृहस्थाश्रम	२.५०
गृहस्थाश्रम की सुव्यवस्था*	३.६०
दिव्य दम्पतियों का निर्माण*	४.००

+सामाजिक जागरूकता

पृथिवी का दिव्यीकरण*	२.५०
राष्ट्रनिर्माण-शास्त्र*	५.००
विश्व-कल्याण*	३.२०
विश्व-सुधार	४.००
सार्वभौम ध्रुवता*	२.७०
सार्वभौम मानवता*	७.००
रक्षा-शास्त्र*	५.००
समृद्धिकरण*	८.००
जगती का आनन्दमयीकरण*	१४.००
वाचस्पति-संस्थान*	६.००

+सामयिक

हिन्दु जाति के अस्तित्व की रक्षा	४.००

+भक्ति

गायत्री	४.००
The Vedic Prayers	**3.00**
प्रभु से विनय	१२.००

+योग

आत्मसाधना*	४.५०
योग-शास्त्र*	८.००
योग-जीवन पद्धति*	८.००
अध्यात्म-सुधा*	२१.००
साधना-विज्ञान*	४.००
ओङ्कारोपासना	२.००
गायत्री-मन्त्र का अनुष्ठान	१.५०
परमयोग	७.००
महामृत्युञ्जय-मन्त्र का अनुष्ठान	०.८०
योगालोक	१६.००
वैदिक योगपद्धति	१.४०
साधना	८.००
The Science of Yoga	**8.00**

+संस्कृत

संस्कृत-शिक्षा (दो भाग)	२.४०
संस्कृत-स्वयंशिक्षक (दो भाग)	७.००

+जीवनी (चरित और चरित्र)

अज्ञात महापुरुष	१.५०
कल्पपुरुष दयानन्द	४.००
गाथा देव 'विदेह' की	०.५०
जीवन-ज्योतियाँ	२.५०
रामचरित	५.००
'विदेह'-गाथा*	५०.००
„ [पुस्तकालय-संस्करण]	६०.००
'विदेह'-स्मृति-अंक ['सविता' पत्र का]	१०.००

+कर्मकाण्ड

तपोयाग	४.००

विजययाग १.६० १-१० अध्याय* ११०.०० आदिम अंशों की व्याख्या]
वृष्टियज्ञ-पद्धति १.२० ११-२० ,, * ११०.०० [यजुर्वेद व्याख्या फुटकर (नीचे देखें)
वैदिक सत्संग ५.०० ३६वां ,, * १.६० अध्यायों में]
वैदिक साधना १.६० ३६वां ,, * ४.०० - **वैदिक अनुशीलन** [डॉ० फ़तहसिंह
सत्यनारायण की कथा ३.५० ४०वां ,, * ४.०० और डॉ० अभयदेव की रचनाएं]
स्वस्ति-याग २.८० [ईशोपनिषत्] ढाई अक्षर वेद के* ५०.००
+कर्मकाण्ड-व्याख्या ३४वें अध्याय की १.५० दयानन्द और उनका वेदभाष्य २०.००
जीवन-पाथेय २.५० [शिव-संकल्पोपनिषत्] प्रगतिशील भारतीयता को वेदों
यज्ञोपवीत-रहस्य १.०० **+वेद-व्याख्या** की देन १२.००
सन्ध्या-मन्त्रों के भावार्थ १.५० **वेदालोक (दो भाग)** ३६५.०० भावी वेदभाष्य के संदर्भ-सूत्र ३०.००
सन्ध्या-योग ४.०० २०% छूट पर [रु० ३१६/- में] मानवता को वेदों की देन २४.००
+ग्रन्थ-टीकाएं **वेदों की सूक्तियां** १०.०० **वेदाध्ययन कैसे करें ?** २.५०
गीता-योग २४.०० **वेदव्याख्या-ग्रन्थ** वैदिक एकेश्वरवाद और ओंकार ४.००
यजुर्वेद-व्याख्या* प्रथम पुष्प [चारों वेदों के २४.०० **'सुपर्ण'-अंक** ['सविता' पत्र का] १०.००

यजुर्वेद-व्याख्या [फुटकर अध्यायों में]

अध्याय १ : व्यक्तित्व का सुनिर्माण २४.००
,, २ : गृहस्थाश्रम की सुव्यवस्था* ३.६०
,, ३ : आत्मसाधना* ४.५०
,, ४ : पृथिवी का दिव्यीकरण* २.५०
,, ५ : दिव्य दम्पतियों का निर्माण* ४.००
,, ६ : शिक्षा-शास्त्र* ४.००
,, ७ : वाचस्पति-संस्थान* ६.००
,, ८ : योग-शास्त्र* ८.००
,, ९ : जीवन संग्राम-शास्त्र* ६.००
,, १० : राष्ट्र निर्माण-शास्त्र* ५.००
,, ११ : योग जीवनपद्धति* ८.००
,, १२ : अध्यात्म-सुधा* २१.००
अध्याय १३ : विश्व-कल्याण* ३.२०
,, १४ : सार्वभौम ध्रुवता* २.७०
,, १५ : सार्वभौम मानवता* ७.००
,, १६ : रक्षा-शास्त्र* ५.००
,, १७ : समृद्धिकरण* ८.००
,, १८ : यज्ञमय जीवन-पद्धति* ७.००
,, १९ : जगती का आनन्दमयीकरण* १४.००
,, २० : विवेकमय जीवन* १४.००
(डॉ० अभयदेव)
,, ३६ : आनन्द-सुधा* १.६०
,, ३९ : साधना-विज्ञान* ४.००
,, ४० : जीवन-संविधान* ४.००

वेद-व्याख्या

यजुर्वेदव्याख्या

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९९१, तीसरा संस्करण; १४५२ पृष्ठ; रु ११०.०० (खण्ड १); रु०११०.०० (खण्ड २)

२१ खण्डों में प्रकाशित होनेवाली, चारों वेदों की हिन्दी व्याख्या, जिसकी मौजूदगी में कोई यह नहीं कह सकता है कि 'वेदों को पढ़ना लोहे के चने चबाना है'। इसके अध्ययन से साधारण हिन्दी जाननेवाले, आबाल-वृद्ध, सब सरलता और रुचि से वेद पढ़ सकते हैं। वेदों को जन जन की रुचि और श्रद्धा का पात्र बना देनेवाला, अपने ढंग का अनूठा वेदभाष्य, जो वेद को विश्वधर्म बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण क़दम है। वेद को मानव और मानवता की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत करनेवाली, वेद के वेदत्व को निखारनेवाली, और उसे जीवन-साहित्य के रूप में प्रदान करनेवाली यह व्याख्या है जो लेखक के लगभग ६० वर्षों के सतत, कठोर अध्यवसाय, मौन, गम्भीर साधना, एवं गहन स्वाध्याय का सुस्वादु सुफल है। यह विश्व-वाङ्मय का गौरव है, हिन्दी-वाङ्मय को 'विदेह' की अमर देन है। जिसने भी इसे पढ़ा है वही मुग्ध हो उठा है। विद्वानों, जनता, पत्रिकाओं—सबने एक स्वर में इसकी महत्ता को जाना और स्वीकार किया है।

इस भाष्य की अपनी विशेषता है चारों वेदों के, जिस क्रम में वे हैं उसी क्रम में, मंत्र-मंत्र, सूक्त-सूक्त, अध्याय-अध्याय, और वेद-वेद की संगति लगाने का प्रयास, जो वेदाध्ययन के इतिहास में पहली बार इतनी गंभीरता से किया जा रहा है। इसकी सफलता से वेद परस्पर असंबद्ध मंत्रों का संकलन-मात्र नहीं रह जाएगा। लेखक प्रत्येक मंत्र का एक सुनिश्चित अर्थ मानता है, यद्यपि गौण वृत्ति से अन्य अर्थ भी लिए जा सकते हैं। संयमपूर्वक योगाभ्यास से आत्म-अवस्थित होकर अन्तःश्रवण और अन्तर्ज्योति के द्वारा वेद-मंत्रों के वास्तविक अर्थों का साक्षात्कार करना लेखक की पद्धति है। वेदों के यथार्थ आशय को स्वयं वेदों में ही पैठकर, न कि परतःप्रमाण-भूत ग्रन्थों की दासता स्वीकार करके, स्वयं वेदों के ही आश्रय से जानना, यह लेखक की विचारसरणि है।

प्रत्येक मंत्रका पदच्छेद, अन्वय, पद्यानुवाद, सूक्तियां तथा विशद, प्रेरणाप्रद, जीवनोत्थानकारी व्याख्या दी गई है। भाषा-शैली ललित, आत्मीयतामय, तथा हृदय की पवित्रता, जीवनसाधना और गहन चिंतन को व्यक्त करने वाली है।

वेदों के आधुनिकीकरण, सरलीकरण, स्पष्टीकरण और साथ ही, उन्हें जनसुलभ और सुबोध बनाने का महान् प्रयास, जो वेदों को 'रामचरितमानस'-जैसा सरल ग्रन्थ बनाने जा रहा है।

सर्वप्रथम, भाग ११वें का प्रकाशन किया गया है। इस भाग के प्रथम खंड में यजुर्वेद १-१० अध्यायों की और द्वितीय खण्ड में ११-२० अध्यायों की व्याख्या है। प्रत्येक अध्याय की व्याख्या पृथक् पृथक् पुष्पों के रूप में भी उपलब्ध है। प्रथम पुष्प का अंगरेज़ी अनुवाद भी हो चुका है।

वेदालोक

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

प्रथम खण्ड; १९९१; द्वितीय संस्करण; २०×२६/८=९०४ पृष्ठ; रु ३५० ००

द्वितीय खण्ड; १९८५; प्रथम संस्करण; २०×२६/८=३०+३३६ पृष्ठ; रु ४५.००

समूची धरती पर वेदों के गौरव की धाक जमाने की क्षमता रखने वाला यह ग्रन्थ है। वेदों के ७५० मंत्रों की व्याख्यारूप, स्वामी 'विदेह' के ७०२ लेखों का यह संकलन एकदम हृदयग्राही, प्रेरणाप्रद, जीवनोत्थानकारी, मानव को विभिन्न समस्याओं के तलस्पर्शी समाधान प्रस्तुत करनेवाला है। ये लेख व्यक्तित्व, परिवार समाज, राष्ट्र और सार्वभौम-मानवतापरक दृष्टिकोण में बाधक सीमाओं को लांघने का उपाय प्रस्तुत करते हैं, अध्यात्म और विज्ञान, हृदय और मस्तिष्क, इह और पर लोक का समन्वय प्रस्तुत करते हैं।

वेदों में क्या है? वेद हम क्यों पढ़ें? ऐसी जिज्ञासाओं का समाधान 'वेदालोक' में उपलब्ध है। वेदों के सार्वभौम, मानवतापरक, असांप्रदायिक और, साथ ही, तर्क-विज्ञानसंगत दृष्टिकोण को यह ग्रन्थ उजागर करता है। वेद अखिल धर्म का मूल क्यों माना गया है, यह जानना चाहें तो एक बार 'वेदालोक' अवश्य देख जाएं; बस, वेद का मानवधर्मशास्त्रत्व स्पष्ट हो जाएगा।

'वेदालोक' वेद के स्वाध्याय का सर्वोत्तम साधन सिद्ध हुआ है। यह 'विदेह' की हिन्दी-वाङ्मय को एक स्थायी देन है। 'वेदालोक' हमारे दैनिक जीवन के लिए प्रेरणाओं का कोश है। 'वेदालोक' आपको, और आपके परिवार को पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञानालोक देगा।

योग

गीतायोग

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९७८; दूसरा संस्करण; ३१२ पृष्ठ; रु २४.००

'विदेह' ने अपनी विशिष्ट शैली (सरलता, स्पष्टता और स्खलित्य जिसके स्वाभाविक गुण हैं) में 'गीता' की यह व्याख्या वैदिक पृष्ठभूमि में, तथा यौगिक साधना और दैनन्दिन जीवन, दोनों को दृष्टि में रखते हुए की है। इसमें उनकी अपनी साधना के अनुभव भी समाविष्ट हुए हैं। 'गीता' के जिन शब्दों से कृष्ण के ब्रह्म होने का भाव लिया जाता है उन्हें लेखक ने तात्स्थ्यस्थितिपरक और पात्र-शैलीनिबद्ध माना है। लेखक की धारणा है कि 'गीता' प्रकारान्तर से वैदिक दर्शन का भाष्य है।

अनेक टीकाकारों ने 'गीता' में अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं की पुष्टि पाने के लिए शब्दार्थ की खींचातानी की है। पर गीतायोग के लेखक ने इस दुष्प्रवृत्ति से बचने का पूरा यत्न किया है। असहमति के स्थलों में उन्होंने ईमानदारी से 'गीता'-कार से अपना मतभेद प्रकट कर दिया है।

'गीता' के श्लोकों पर, उनके आरम्भ में, क्रम-संख्या (१ से ७०० तक) दे दी गई है ताकि संदर्भ देने में और भी सुविधा रहे। संस्कृतानभिज्ञ हिन्दी पाठक की सुविधार्थ श्लोकों के प्रत्येक शब्द को पदच्छेद करके पृथक् दर्शा दिया गया है। इससे केवल हिन्दी जाननेवाला पाठक भी 'गीता' की भाषा को गहराई से समझ सकता है। अन्त में श्लोकों की अकारानुक्रमणिका भी है।

'गीता' पर अनेक व्याख्याएं उपलब्ध हैं। पर गीतायोग की अपनी कुछ नवीन विशिष्टताएं हैं जिनके कारण यह ग्रन्थ सबके लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है।

योगालोक

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९९२; तीसरा संस्करण; ११६ पृष्ठ; रु १६.००

पतञ्जलि-प्रोक्त **योगदर्शन** के सूत्रों की सरल, सुबोध, वैज्ञानिक और साधनापरक वृत्ति, जो लेखक के स्वानुभवों से संपुष्ट, व्यवहारिक और योगसाधक को दृष्टि में रखकर लिखी हुई है। लेखक का जितना श्रम वेद में है, उससे कम योग में नहीं है। अतः इस ग्रन्थ को उनकी अपनी साधना का फलरूप समझना चाहिए। लेखक के व्यक्तित्व के योग-संबद्ध महत्त्वपूर्ण पक्ष को जानने के लिए इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। प्राचीन भाष्यों और टीकाओं का अन्धानुकरण इसमें नहीं है वरन् लेखक का अपना चिन्तन एवं अभ्यास इसमें हर पृष्ठ पर मिलेगा।

साधना

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९८३; छठा संस्करण; १०४ पृष्ठ; रु ८.००

आत्मसाधना विषय पर यह ग्रन्थ सर्वोत्तम है। शास्त्रीय जटिलताओं से मुक्त, यह ग्रन्थ राजयोग के राजमार्ग पर साधक का उत्तम मार्ग-प्रदर्शन है। बीसियों वर्षों के अभ्यास के बावजूद जिनकी प्रगति असंतोषप्रद थी, ऐसे कई साधकों ने इस ग्रन्थ से ज्योति प्राप्त करने का अपना मार्ग प्रशस्त किया है। अनेक योगियों ने, उन्तीस लेखों के इस संकलन को अतिसरल, सुगम, स्पष्ट और अभ्यासगम्य बताया है। अध्यात्म-पथ के जिस साधक ने इस ग्रन्थ को नहीं पढ़ा वह एक अमूल्य रत्न से वंचित है। इसका अंगरेजी अनुवाद भी हो चुका है।

अन्य

गृहस्थविज्ञान

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९७७; दूसरा संस्करण; १३२ पृष्ठ; रंगीन आवरण-पृष्ठ; रु ८.००

गृहस्थधर्म अपने आपमें एक विज्ञान है। सारा संसार घरों में रहता है। रहने की कला सबको ज्ञात नहीं है। यह पुस्तक 'विदेह' के गृहस्थविद्या-विषयक, ३२ लेखों का संकलन है जिसमें ३५ वेदमंत्रों के आधार पर विषय-प्रतिपादन किया गया है। इसमें विवाह और गृहस्थ-प्रवेश से लेकर संतान-प्रसव से वृद्धावस्था पर्यंत, व्यक्ति के चारों आश्रमों और सोलह संस्कारों के सार का भी प्रकारांतर से प्रतिपादन हो गया है।

संस्कृत-स्वयंशिक्षक

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

प्रथम पुष्प : १९७५; चौथा संस्करण; ५८ पृष्ठ; रु ३.००

द्वितीय पुष्प : १९७४; दूसरा संस्करण; ७४ पृष्ठ; रु ४.००

बिना अध्यापक व सहायक के स्वतः संस्कृत सीखने का सर्वोत्तम साधन। इस बात की विशेष सावधानी बर्ती गई है तथा परीक्षण किए गए हैं कि इस ग्रन्थमाला को पढ़नेवाले को कहीं रुकना वा अटकना न पड़े। व्याकरण को रटने के बजाय प्रभूत अभ्यास के द्वारा अधिगत करने की आधुनिक 'डायरेक्ट' पद्धति को इसमें अपनाया गया है।

ढाई अक्षर वेद के

डॉ० फ़तहसिंह, एम ए डी लिट्; भूमिका : डॉ० कर्णसिंह; प्राक्कथन : डॉ० अभयदेव
१९८९; प्रथम संस्करण; १८×२२/८=१५२ पृष्ठ; चार विशिष्ट; मैपलीथो काग़ज, आफ़सैट मुद्रित बहुरंगी आकर्षक आवरण; रु० ५०.००।

वेद पर आपने अनेकों ग्रन्थ और भाष्य भले ही पढ़े हों, इस ग्रन्थ को पढ़कर वेद को आप बेहतर समझ रहे होंगे और आपके चिन्तन के लिए ढेरों नए परिप्रेक्ष्य उपस्थित होंगे। गुरु-शिष्यसंवाद शैली में ३२ विषयों का विवेचन इसमें हुआ है। वेद का परम अभिप्राय अध्यात्म है। अतः वेद का परम प्रतिपाद्य अ, उ, म्, ये ढाई अक्षर हैं। वेद का आध्यात्मिक पक्ष उसकी प्रतीक शैली को समझ लेने पर ही प्रकट होता है। और तब पुराण, तंत्र आदि भारतीय चिन्तन की ही नहीं, यहूदी, यूनानी, रोमन, क्रिस्त, इस्लामी चिन्तन की भी संगति वेद के साथ बैठने लगती है।

प्रगतिशील भारतीयता को वेदों की देन

डॉ० फ़तहसिंह, एम ए, डी लिट्
१९९१; प्रथम संस्करण; १८×२२/८=१२+५२ पृष्ठ; पंचरंगी सुन्दर आवरण; रु १२.००

अपनी प्रसिद्ध संवाद-शैली में, लेखक ने चार परिच्छेदों के इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में जॉन, जहूर और सोफ़िया के साथ गुरु की वार्ता द्वारा आज की उन विघटनकारी, घृणामूलक, आतंकपरक दुष्प्रवृत्तियों के निराकरण में वेदों की देन के आधार पर मानव के 'वसुधैव कुटुम्बकं' वाले उस वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट किया जिससे 'भारत' अपने नाम को धन्य करता रहा है और पुनः कर सकता है। अपनी भारतीयता को खोकर नहीं, बल्कि वास्तविक भारतीयता को स्वीकार करके ही 'प्रगतिशील' हुआ जा सकता है। पुस्तक इतनी सरस, सरल, रोचक है कि एक बार पढ़ना आरंभ करने पर हाथ से छूटती नहीं है।

मानवता को वेदों की देन

डॉ० फ़तहसिंह
१९८१; प्रथम संस्करण; ९८ पृष्ठ; रु १२.००

मानवता को वेदों की देन है उसे उसके उदात्त और व्यापक स्वरूप का बोध कराना, जिसे आचरण में लाने से, जातियों, रंगों और मतों में विभक्त मानवों का समाज स्वर्ग बन सकता है और धर्म को विष के बजाय अमृत बनाया जा सकता है।

विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ के माध्यम से दर्शाया है कि अरब, असीरिया, ईरान, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, जापान, तिब्बत, बेबीलोन, भारत, मिश्र, यूनान, यूरोप, रोम, सुमेर, आदि की परम्पराएं तथा इंजील, बाईबिल, क़ुरआन, तन्त्र, पुराण, आदि की उक्तियां और कथाएं वेद के प्रतीकार्थों से बोधगम्य होकर, मनु के

कथन, 'सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति' को सत्य प्रमाणित कर देती है।

यह ग्रन्थ वेदों के प्रतिपाद्य विषय का सप्रमाण और स्पष्ट प्रतिपादक है तथा वैदिक प्रतीकशैली को समझने की कुंजी थमाता है। साथ ही, यह वैदिक प्रतिभा की मौलिक महिमा को प्रकट कर, वेदों की विभूति को सर्वसुलभ बनाता हैं।

स्वास्थ्य और सौन्दर्य

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९८१; आठवां संस्करण; ४८ पृष्ठ; रु ३.००

स्वास्थ्य और सौन्दर्य, दो पवित्र नियामतें और योग की सुपावन विभूतियां हैं। जीवन के अन्तिम क्षण तक इनसे युक्त रहना चाहिए। किस प्रकार? यह इस ग्रन्थ के तेईस निबन्धों से जानना चाहिए। लेखक का दृष्टिकोण शरीर को आत्मसाधना का स्वस्थ साधन बनाना है। अत: यह ग्रन्थ, स्वयं लेखक के अनुसार, उनके 'साधना' ग्रन्थ का पूरक समझा जाना चाहिए। यह बड़ा उपयोगी एवं लोकप्रिय ग्रन्थ सिद्ध हुआ है।

वैदिक बाल-शिक्षा

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९८०; सातवां संस्करण; १६० पृष्ठ; रु १०.००

यह ग्रन्थ चार छोटे छोटे भागों में बंटकर भी उपलब्ध है। प्रथम भाग का मूल्य रु ५.०० और अगले प्रत्येक भाग का मूल्य रु २.५०।

वेदों की सूक्तियों और मंत्रों के आधार पर बालक-बालिकाओं को संबोधनपूर्वक दी गई १०६ सुशिक्षाओं का संकलन। बच्चों को सौम्य, सुशील, शालीन, सदाचारी, मर्यादापालक और धर्मात्मा बनाने के लिए यह ग्रन्थ आदर्श है। सात संस्करणों में प्रकाशित यह ग्रन्थ बड़ा लोकप्रिय हुआ है।

गायत्री

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

१९८१; छठा संस्करण; ७४ पृष्ठ; तिरंगा आवरण-पृष्ठ; रु० ४.००

गायत्री-छन्दोबद्ध, ५२ ऋग्वेदीय मंत्रों पर प्रार्थना-शैली में व्यक्त भावोद्गार। प्रार्थना से जीवन को ऊंचा उठाने में सहायता मिलती है। इन प्रार्थनाओं की ऋजुता और गहराई मर्मस्पर्शी है। इस ग्रन्थ का अंगरेजी अनुवाद भी हो चुका है।

THE VEDIC PRAYERS

Swami Vidanand 'Videh'

1971; 2nd impr; 114 P; Rs 3.00

The English translation of 'Videh's 'Gayatri'

प्रभु से विनय

१९७७; प्रथम संस्करण; ११२ पृष्ठ; रु १२.००

वेदमन्त्रों पर आधारित, ८४ प्रार्थनाओं का अनूठा संकलन जिसमें भक्ति और साधना का प्रभाव उमड़ा पड़ रहा है।

वेद के स्वाध्याय का सर्वश्रेष्ठ माध्यम

वेद-सविता

वेदमन्त्रों की व्याख्या का भूतल पर एक मात्र मासिक पत्र

प्रकाशन के ४५वें वर्ष में (पूर्व-नाम 'सविता' से फ़रवरी १९४८ से सतत प्रकाशन)

२० × ३०/८ आकार के ३२ पृष्ठ, जिसमें स्थायी महत्त्व की प्रेरक, उत्प्रेरक सामग्री भरी होती है। इसका प्रत्येक अंक पुस्तक के समान पठनीय और रक्षणीय होता है।

- प्रति-अंक १०-१२ वेदमन्त्रों पर चिन्तन और व्याख्याएं
- हर अंक में एक वेदव्याख्या वेदप्रवचनकर्ताओं की दृष्टि से
- वेद की विज्ञानपरक व्याख्या स्वयं विज्ञानवेत्ता की क़लम से
- वेदों की योगशास्त्रीय व्याख्या का स्वरूप 'वेद-सविता' में उदित हो रहा है
- बालकों, युवक-युवतियों, महिलाओं के लिए सामग्री

१ **शुल्क** : एक प्रति रु ३.००; वार्षिक : रु ३५.००; आजीवन रु ५००।

२ विदेश-स्थ ग्राहकों को पोस्टेज-व्यय पृथक् से देय (जैसे, यू एस ए के लिए वर्तमान में वार्षिक पोस्टेज-व्यय हवाई रु ७८, पर समुद्री रु ३६ है।)

३ पत्र का वर्ष अगस्त से जुलाई। ग्राहक किसी भी मास से बन सकते हैं।

४ **प्रकाशन तारीख** : पूर्व मास की २७ तारीख।

५ **विज्ञापन/भेंटपृष्ठ-दरें** : पूरा पृष्ठ रु ५००/-, आधा पृष्ठ रु २७५/-, चौथाई पृष्ठ रु १५०/-

॥ एक एक शब्द पठनीय, मननीय, आचरणीय ॥

॥ एक एक तरंग मानव को ऊंचा उठानेवाली ॥

॥ एक एक प्रेरणा जीवन को आगे ले जानेवाली ॥

॥ एक एक चेतावनी मानव के मानस को चेतानेवाली ॥

'वेद-सविता' पर सुधी पाठकों के कुछ विचार

भारतीय सभ्यता व आर्य-संस्कृति का प्रतीक।·····ज्ञानबिन्दुओं से भरा सागर।····· ऋषियों से आते हुए उपदेश।·····अनुपमेय, अद्वितीय।····· युद्धपीड़ित विश्व को अमृत घुट्टी।····· ठोस सामग्री। पत्रिका नदी के वेग की तरह।·····एक एक अक्षर अमूल्य।·····चरित्रसुधार और राष्ट्रनिर्माण में भागीरथ प्रयत्न।····· इसे पढ़कर हृदय एवं मस्तिष्क स्वयं को वेदों की ऋचाओं के अधिक निकट अनुभव करने लगते हैं।·····जिनका अभ्युदय होगा वे 'सविता' का नित्य स्वाध्याय करेंगे।·····गौरव की बात।····· वेद का सरलतम भाषानुवाद।·····प्रत्येक अंक में जीवननिर्माण-जीवनोत्थान की ठोस सामग्री।·· ···वेदमन्त्रों की सुबोध, रोचक व्याख्या का पथ प्रदर्शक।·····'सविता' के हजारों, लाखों ग्राहक होने चाहिएं।····· जब से 'सविता' का अनुशीलन कर रही हूं मेरे जीवन मे भारी परिवर्तन हुए हैं।·····वास्तव में सविता ही है।····· पत्रिकाओं में सबसे प्रथम 'सविता' का प्रगाढ़ प्रभाव मेरी जिन्दगी पर पड़ा। यह क्रांतिकारी प्रभाव डालता है। कुछ-न-कुछ पढ़ने, लिखने, सुनने एवं गुनने की निरन्तर प्रेरणा मिलती है।·····मुझमें जो कुछ भी ग्राह्य है वह श्री 'विदेह' और 'सविता' की देन है।·····लोगों का चाव 'सविता' के प्रति अत्यधिक है।·····पत्रजगत् में 'सविता' का महत्त्वपूर्ण स्थान।·····लेख शुद्ध और प्रामाणिक छपते हैं।·····'सविता' के प्राच्य अंकों में मुझे कुछ भी पुरानापन नजर नहीं आता है।·····'सविता' का लक्ष्य जीवन-लक्ष्य का स्पष्टीकरण।·····'सविता' ने स्वाध्यायप्रेमियों का भारी हित किया है, वेदप्रचार की नयी प्रणालियां सुझाई हैं, स्थायी महत्त्व के सात्त्विक साहित्य की अभिवृद्धि की है। वेदप्रसार के आन्दोलन में 'सविता' का अध्याय बहुत शानदार है।·····इस अनास्थावादी युग में एक सुदृढ़ स्तम्भ।·····अतुलनीय मानसिक पाथेय। श्री 'विदेह' का हृदय इसमें बोलता-सा लगता है।·····'सविता' की पहली झलक ने ही मुझे हमेशा के लिए आकृष्ट कर लिया।·····'सविता' आध्यात्म-सविता है।·····सामग्री का संयोजन एवं स्तर उच्च कोटि का।·····महिने में कई कई बार इसका पारायण कर जाता हूं और हर बार नई सूझ-बूझ मिलती है।·····आज के कलयुगी अन्धकार में आकाशदीप।·····पाठक को मुग्ध कर छोड़ने वाले छोटे छोटे लेख।·····'सविता' सोते हुए को जगा देती है, भटकते हुए को सीधे रास्ते पर लाती है।·····भूले हुए बल को याद दिलाने के लिए अनोखी पत्रिका।

सुपर्णांक (परिशिष्ट सहित)

['सविता' के मार्च, अगस्त, १९७३ के अंक]

२० × ३०/८ = ५० + १५२ पृष्ठ; अतिशुद्ध, आकर्षक मुद्रण। रु ३.००

'सविता' का यह विशेषांक 'सुपर्णांक' वैदिक वाङ्मय को स्थायी महत्त्व की देन है। इसमें वेदों की संहिताओं, ब्रह्मणारण्यकोपनिषदों, वेदांगों, आदि में आए हुए उन सब स्थलों का सविस्तार विवेचन किया गया है जहां 'सुपर्ण' शब्द का प्रयोग है। सुपर्ण और नागों की कथा महाभारत और पुराणों में मिलती है। तन्त्र में भी सुपर्ण की साधना है। चित्र और मूर्ति कलाओं में भी सुपर्ण के अंकन हुए हैं। 'सुपर्ण' अन्तरराष्ट्रीय महत्व का दार्शनिक प्रतीक है। 'सुपर्ण' को अमृत के अवरोहण का प्रतीक माना गया है। 'सुपर्ण' का विभिन्न दृष्टिकोणों से इस विशेषांक में विशद विवेचन किया गया है। 'सुपर्ण' पर इतनी वैदिक सामग्री पहली बार एक जगह इसमें

उपलब्ध हुई है। इसके लेखन-संपादन में कितना अधिक श्रम किया गया है यह इसे पढ़कर अनुभव करने की चीज है। आने वाली पीढ़ियां चिर काल तक इसका लाभ लेंगी। जिसने इसे देखा वही मुग्ध हो उठा।

'सुपर्णाक' पर कुछ सम्मतियां

डॉ सिद्धेश्वर वर्मा (चंडीगढ़) : एक ही धारणा पर इतना लिखा जा सकता है—अवगाहन इसी को कहते हैं।

डॉ गोपिकामोहन भट्टाचार्य (कुरुक्षेत्र): गम्भीर, शोधपूर्ण तथा प्रायः आध्यात्मिक लेखों का सुन्दर, उपयोगी और आकर्षक संकलन। ऐसे विशेषांकों की महत्ता अनुपेक्षणीय।

डॉ रामगोपाल (चंडीगढ़) : वैदिक 'सुपर्ण' के सम्बन्ध में यह शोधपूर्ण सामग्री वैदिक विद्वानों तथा वेदप्रेमियों के लिए बहुत उपयोगी और सहायक। सभी निबंध विद्वत्तापूर्ण।

Prof. Dr. B. R. Sharma (Hoshiarpur) : Fine work.

सिद्धेश्वर चित्राव, शास्त्री (पूना) : सम्पादन परिश्रमपूर्वक। लेखों में गवेषणा, अभ्यास और वेदों के ऊपर श्रद्धा। प्रयत्न अत्यन्त प्रशंसनीय। अनेक स्थलों में अच्छा प्रकाश डाला है।

डॉ चिन्तामणि ग काशीकर (पूना) : सम्पादन पर्याप्त मात्रा में सफल। इस प्रकार के अंकों का संपादन कोई आसान बात नहीं।

डॉ सदाशिव अं डांगे (बम्बई) : बड़ा ही सुन्दर। सुपर्ण-कल्पना के अंग-प्रत्यंग पर विचार; विद्वानों तथा विद्यार्थियों को बड़ा लाभ होगा।

डॉ फतहसिंह (पीलीभीत) : इसने 'सविता' को शोध-पत्रिकाओं में विशेष एवं महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया। स्तुत्य परिश्रम, विवेक एवं शोधप्रवृत्ति।

डॉ सुधीरकुमार गुप्त (जयपुर) : टिप्पणियां बहुत उपयोगी, जिनमें व्याकरण, निर्वचन, भाव, प्रतीकों का विवेचन-व्याख्या है। सभी लेख उच्च-शोधात्मक। वेदाध्येता के लिए उपयोगी, अनिवार्य, अनुभूति और प्रेरणा देनेवाली।

डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी (वाराणसी) : लेख ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक।

डॉ सूर्यनारायण व्यास (उज्जैन) : हिन्दी में यह सर्वथा महत्त्वपूर्ण, श्रेष्ठ एवं उपादेय।

राय कृष्णदास (वाराणसी) : बहुत ही सुन्दर सामग्री।

(महाराज कुमार) रघुवीर सिंह (सीतामऊ) : लेख अधिकारी, गंभीर विद्वानों द्वारा लिखे गए। अध्येताओं और संशोधकों को उपयोगी तथा प्रेरक।

डॉ मुन्शीराम शर्मा 'सोम' (कानपुर) : अनुपम सामग्री; चिंतन के लिए कई पक्ष उत्पन्न कर दिये हैं। ज्ञानवर्धक।

पं युधिष्ठिर मीमांसक (सोनीपत) : अधिकारिक व्यक्तियों के लेखों का सुन्दर संग्रह। सुपर्ण के विषय में गंभीर विचार के लिए मार्गदर्शन; अत्यन्त महत्त्वपूर्ण। ऐसे विशेषांकों का क्रम जारी रखना चाहिए।

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती (प्रयाग) : साहित्य की अच्छी सेवा।

वेद-संस्थान

३९५/२९, ब्यावर रोड, अजमेर ३०५ ००१, भारत
सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ११० ०२७, भारत [दूरभाष : ५० २३१६]
एक्ट २१ (१८६०) के अधीन पंजीकृत

स्थापना : १४ फरवरी, १९४८ (अजमेर), १४ जून, १९५९ (नई दिल्ली)

उद्देश्य

वेद को विश्वधर्म बनाना, संस्कृत को विश्वभाषा बनाना, विश्व में वैदिक संस्कृति की स्थापना करना।

संस्थापक-अध्यक्ष : दिवंगत स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
वर्तमान अध्यक्ष : अभयदेव शर्मा, एम ए, पीएच डी

कार्य-योजना : दश सदन : अङ्गिरा-, साधना-, शोध-, विज्ञान-, साहित्य-, ब्रह्म-, शिक्षा-, सेवा-, मुद्रण-, अर्थ-सदन

गति-विधियां : साधना-, शोध-, साहित्य-, ब्रह्म-, अर्थ-सदन कार्यरत।

वेद-संस्थान इस भूमण्डल पर वेद और वेदाचार को ही समर्पित, अपने ढंग की अकेली संस्था है जिसका सम्पूर्ण सामर्थ्य और ध्यान वेद पर केन्द्रित है। इसकी सब-विध भरपूर सहायता करने के लिए इसके सदस्य ('होता') बनने के लिए आपका आह्वान है। अपनी गरिमा, हैसियत, सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार निम्न में से किसी कोटि को चुनकर, वेद-संस्थान के (होता) सदस्य बनने के लिए आप सादर नि-मन्त्रित हैं।

आजीवन सदस्य

- संस्थापक : दस सहस्र वा अधिक राशि एकमुष्ट भेंट करनेवाले
- संरक्षक : पांच सहस्र वा अधिक राशि एकमुष्ट भेंट करनेवाले
- प्रशस्त : एक सहस्र वा अधिक राशि एकमुष्ट भेंट करनेवाले
- सम्मानित : पांच सौ वा अधिक राशि एकमुष्ट भेंट करनेवाले

वार्षिक सदस्य

- वेदभक्त : सौ रुपए वा अधिक राशि एकमुष्ट प्रतिवर्ष भेंट करनेवाले
- पोषक : समय समय पर निर्धारण होने वाली राशि एकमुष्ट प्रतिवर्ष भेंट करनेवाले [वर्तमान में यह राशि रु. ५० है]

ज्ञातव्य : १) संस्थान को प्रदत्त दान पर दाताओं को आयकर से छूट धारा ८० जी के अधीन प्राप्त है।
२) सब सदस्यों को मासिक 'वेद-सविता' नि:शुल्क भेंट किया जाता है।
३) संस्थान के 'नवीन' प्रकाशन संस्थापक और संरक्षक आजीवन होताओं को नि:शुल्क भेंट किए जाते हैं।
४) रु० १०० अथ वा अधिक मूल्य के प्रकाशनों पर सब कोटि के होताओं को २०% रियायत दी जाती है।

'वेद-संस्थान क्यों ? क्या ?' एक परिचय

यह पुस्तिका नि:शुल्क मंगाकर संस्थान-विषयक पूरी जानकारी लीजिए और संस्थान सदस्य बन कर वेदान्दोलन में अपना अमूल्य सहयोग दीजिए।

वेद-संस्थान के प्रकाशनों (८४) की अ-कारादि सूची

अध्यात्म-सुधा	२१.००	प्रभु से विनय	१२.००	वेदालोक, २ रश्मि	३६५.००
आत्मसाधना	४.५०	भारत के अध्यापकों से	२.००	वेदों की सूक्तियां	१०.००
आनन्द-सुधा	१.६०	भारत के विद्यार्थियों से	३.००	वैदिक एकेश्वरवाद और	
उत्तम स्वभाव	०.८०	भावी वेदभाष्य के संदर्भ-सूत्र	३०.००	ओंकार	४.००
ओङ्कारोपासना	२.००	महामृत्युञ्जय-मंत्र का		वैदिक बाल-शिक्षा, ४ भाग	१२.५०
कल्पपुरुष दयानन्द	४.००	अनुष्ठान	०.८०	वैदिक योग पद्धति	१.४०
गाथा देव 'विदेह' की	०.५०	मानवता को वेदों की देन	२४.००	वैदिक सत्संग	५.००
गायत्री	४.००	मानवधर्म	१.५०	वैदिक स्त्री-शिक्षा, २ भाग	३.२०
The Vedic Prayers	3.00	यजुर्वेद-व्याख्या, दो भाग	२२०.००	व्यक्तित्व का सुनिर्माण	२४.००
गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान	१.५०	यज्ञमय जीवन-पद्धति	७.५०	An Exposition of the	
गीतायोग	२४.००	यज्ञोपवीत-रहस्य	१.००	Vedas	12.00
गृहस्थविज्ञान	८.००	योग-जीवनपद्धति	८.००	शिक्षा-शास्त्र	४.००
गृहस्थाश्रम	२.५०	योग-तरंग	४.००	शिव-सङ्कल्प	१.५०
गृहस्थाश्रम की सुव्यवस्था	३.६०	योग-शास्त्र	८.००	सत्यनारायण की कथा	३.५०
ढाई अक्षर वेद के	५०.००	योगालोक	१६.००	सन्ध्या मन्त्रों के भावार्थ [नैट]	१.५०
चरित्र-निर्माण	१.५०	रक्षाशास्त्र	५.००	सन्ध्या-योग	४.००
जगती का आनन्दमयीकरण	१४.००	रामचरित	५.००	समृद्धिकरण	८.००
जीवन-ज्योतियाँ	२.५०	राष्ट्रनिर्माण शास्त्र	५.००	संस्कृत-शिक्षा, २ भाग	२.४०
जीवन-पाथेय	२.५०	वाचस्पति-संस्थान	६.००	संस्कृत-स्वयं शिक्षक, २ पुष्प	७.००
जीवन-संग्राम-शास्त्र	६.००	विजय-याग	१.६०	साधना	८.००
जीवन-संविधान	४.००	'विदेह'-गाथा	६०.००/५०.००	The Science of Yoga	8.00
जौहर-गान	६.५०	'विदेह'-गीतावली	७.५०	साधना-विज्ञान	४.००
तपोयाग	४.००	'विदेह'-वाणी, ३ उद्गार	३०.००	सार्वभौम ध्रुवता	२.७०
दयानन्द और उनका वेदभाष्य	२०.००	'विदेह'-स्मृति-अंक	१०.००	सार्वभौम मानवता	७.००
दयानन्द-चरितामृत	१०.००	विवेकमय जीवन	१४.००	सुपर्णाक	१०.००
दिव्य दम्पतियों का निर्माण	४.००	विश्व-कल्याण	३.००	स्वस्ति-याग	२.८०
परमयोग	७.००	विश्व-सुधार	४.००	स्वास्थ्य और सौन्दर्य	३.००
पृथिवी का दिव्यीकरण	२.५०	वृष्टियज्ञ-पद्धति	१.२०	Health & Beauty	4.00
प्रगतिशील भारतीयता को		वेदमाता	३.००	हिन्दु जाति के अस्तित्व की	
वेदों की देन	१२.००	वेदाध्ययन कैसे करें ?	२.५०	रक्षा	४.००